

DPN 5789

Title : १. देवी महात्म्य देव्या कवच
२. अर्गला स्तुति

DEVĪ MAHĀTMYA DEVYĀ KAVACA
ARṢALĀ STUTI

Run. No. 6480

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तुति Stuti

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21 x 6.5

Folios 5
(missing 4)
Chapt. / act /

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0 cms.

5

10

15

20

15

10

5

0

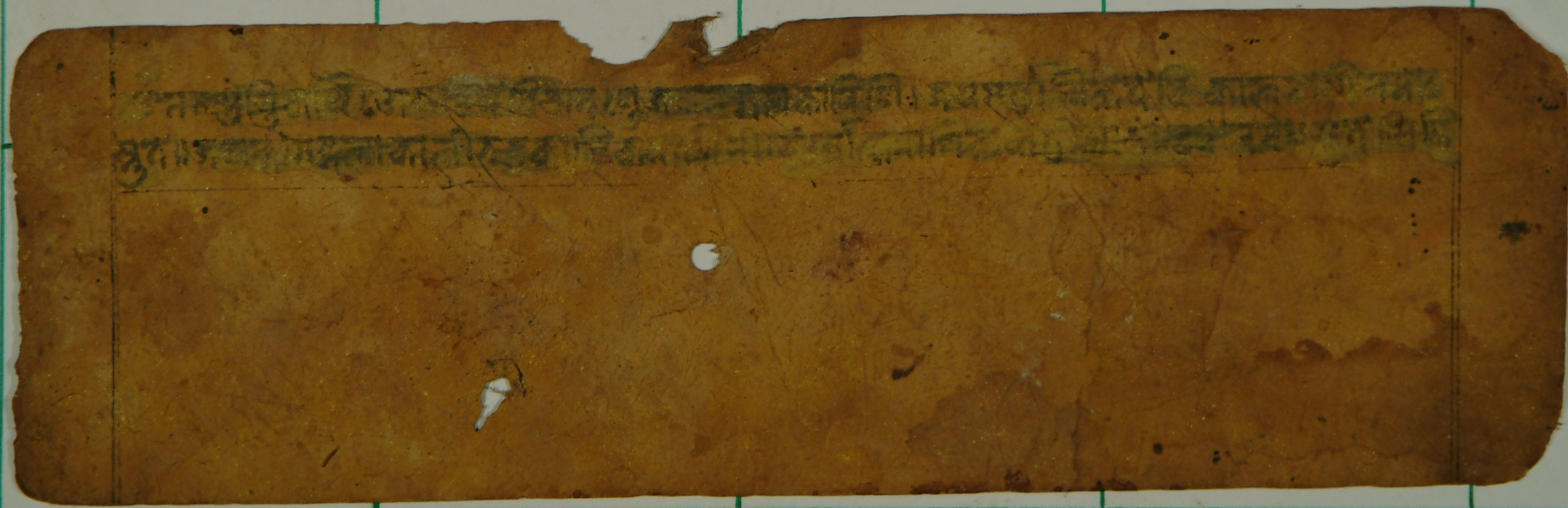
Cms.

5

10

15

20



श्री ४

कनकनारु यवर्चिनी ॥ प्राच्या वन्दुसामेन्द्री आग्रयाममिदं वता ॥ दक्षिणैव वावाहिने मृत्प्राखदु
 धारिणी ॥ पुती श्रुतिवर्णी वन्दे दायश्रुमृगवाहिनी ॥ उदी श्रुतिवन्दे कोवरी चैव गङ्गा मूलधारिणी ॥ उद्व
 बुद्धाणि मन्दे दधे स्नाद्वेषु वीरथा ॥ नर्व दणदिणवन्दे चामुणव वाहना ॥ जयामेवाय
 तस्मादु विजया म्हापृष्ठ न ४ अजिता ॥ वामया एव दक्षिणैव वावाहिता ॥ निर्यामथा
 तिनी वन्दे दमामृद्विशुव सिता ॥ माला धवीललाटचक्रवो वन्दे श्रुतिनि ॥ निनगाचक्र
 वामे (कृ) यमर्घटा च नालिका ॥ शिखिनी वन्दे वामे (कृ) एण गथा द्वा ववासिनी ॥ कया लो कालिका वन्दे
 त्वर्णुमूल कुर्ण कवी ॥ नासिकाया मृगया च उरु वाष्टव च चक्रिका ॥ अधम चामृग कलाजि कां चापि

२

सवस्वती ॥ दक्षानन्दे कुकोमावी कलम (कृ) रुचणिका ॥ घण्टिका चिनुर्घटा च मद्रामाया च तालक ॥
 कामाख्या चिद्वी वन्दे दार्चम सर्वमंगला ॥ गीवायारुद्र काली च पृष्ठार्च (कृ) धनर्द्धवी ॥ नीलग्रीवा वहि
 क्कण्डनलिकानलक वली ॥ खद्वधारि शुभेस्का (कृ) वादु मवका धारिणी ॥ हस्ते च दण्डिनी वन्दे
 दम्बिका चिंगुली कथा ॥ नखानुगुल श्रु नी वन्दे क्कदी वन्दे कलश्वरी ॥ स्तनी वन्दे मद्रादवी
 मनःशङ्क विनागिनी ॥ रुद्रयैललिता दवी उदवर्मि रुवाहिनी ॥ नासिका सिनी वन्दे कु
 श्मगुच्छ श्वरी ॥ मेघश्रु वन्दे दुर्गन्धो कर्णरुगवती तथा ॥ रुतश्रुमी मूकयू (म) डू वममय वाहिनी ॥
 जंघमद्रावला प्राका जानू यू (म) विनायकी ॥ गुल्फा ला वर्मि ही चया दपृष्ठ च नैज सी ॥ यादा गुली ४

तथा २

शीघ्रवीभयादावसुतवासिनी। दक्षात्कनालिनीवत्कङ्कणमण्डकलिनी॥ वामकूपानि कोवनीत्वच
 वागण्युनीतथा॥ वकामजाविणमामा मुक्तिमदां सियावृती। अंगानिकातवाणीवयित्तं वमुकटशुनी॥
 यदावती यदाकायकठं वृतामणीतथा॥ दक्षात्कनालिनीवत्कङ्कणमण्डकलिनी॥ वामकूपानि कोवनीत्वच
 कुलिभनकं कृत्वा यत्किमुपनीतथा॥ अ
 लीतधावानमूयानसुसमानकी॥ वद
 र्गवयस्यल्लग्नवद्विती॥ सत्त्ववजस्तमलेव नक्तनायणीतथा॥ आयुवक्तुवोनादी
 धर्मवक्तुवेषूवी। यगः कीर्तिचलत्नी चमदावक्तुवेषूवी। गारुमेयालिभनक्तुवेषूवी

जयसुफलतीचर्णुकृत्वा कवचमादितः॥ निर्विघ्नरुवे सिद्धिगुणीजयसमूहवा॥ आंवहूमणुर्लध
 र्कसल्लव नकाननातावकिष्टमिदित्यां सक्तियुगुपीककी। अयुक्तलेरुतयुगं। मराशालिरु
 तक्रिय॥ ॐ शिवा नतत कामानरुव
 नाजितः॥ वक्तुनिर्मितं दिव्यं कव
 र्गति॥ दक्षा नयवर्मस्तु नयत्तु वनयि
 प्राप्तातिवृत्तानिर्लमरासायाप्रसादतः॥ ॐ तिष्णीमार्क (पुययूनायूना) लदवीमरात्मा
 वक्तुविनचितं दद्याः कवचसमार्क॥ ॥ गुरुं ॥

१३ तमश्रुति कार्थे ॥ जय त्वं दविचाम ॥ पुजय मंगल कारिणि ॥ जय सर्वान्त्रिक द विकाल वाणि नमाऽमृत
 ॥ जय कीम सुता काली रुद्र कालिक यालिनी ॥ दग्धा कुमालि वाध गीला हास्य धान माऽमृत ॥ मदि
 वासुव निन्ना निविध गी वन द नमः ॥ नृपद दिय ॥ द दिजय द दि द्विधा ज हि ॥ वन्दि
 गी धियु गद विमो रागु वन दा यि ॥ ति ॥ नृपद दि ॥ मध्व के ट रु वि दा नि वि ध गी व न द
 तमः ॥ नृपद दि ॥ अचिन्ना नृप च नि ॥ ग स व र्ण क वि ता नि नी ॥ नृपद दि ॥ सुव श्रा र
 कियु कानां च पुन क द वि ता य द ॥ नृपद दि ॥ त ग र ४ स र्व दारु क्पा च पुन क ग्रा धि ता नि ति ॥ नृपद दि
 ॥ च पुन क म र्ग र्थ त्वा म र्ज य की रु र कि त ४ ॥ नृपद दि ॥ दे दि मो रा गु मा भ ग्रा द दि द वि य र्म स र्व ॥ नृ

पद दि ॥ वि ध दि द्वि य ता ना र्ण वि ध दि य र मा नि र्थ ॥ नृपद दि ॥ सूना सुन नि वा व त्त नि द्य रु च
 वणा म्बु ज ॥ नृपद दि ॥ वि द्या व र्ण य ॥ व र्ण त क्पी व र्ण ज र्ण क न ॥ नृपद दि ॥ पु च पु दै ल द र्थ
 धु च पुन क य ता य म ॥ नृपद दि ॥ कृ ॥ धू त र्म मृ ता द वि स र्व रु क्पा स दा नि क ॥ नृपद दि ॥
 च रु व र्ण च रु व र्ण स म्भु त य र म भु वी ॥ नृपद दि ॥ ॐ न्दा नी य ति स र्वा व यु जित य र म भु
 वि ॥ नृपद दि ॥ द वि य च पु दार्द पु द ॥ ल द र्थ वि ता नि ति ॥ नृपद दि ॥ य त्नी म ना व र्मा
 द दि स ना वृ क्ता न्मा वि णी ॥ ता वि णी दग्धा र्म सा व र मा ग र सा क्पा र्वा रु र्वा ॥ ॐ द र्मा र्ण य वि ता रु म हा
 क्पा र्ण य ॥ ॐ त्र न ४ ग त म फ स क र्था क व न मा प्र ति र्म य द ॥ ॐ त्र न्ता मु ति ॥ ॥ वि णु र्द

15

10

5

0

cms.

5

10

15

20

श्री ४

ज्ञानदंदाय विद्वदीदिवाचक्यः। प्रियश्च यादिकिनिमित्ताय नमः ॥ समासार्द्धाविष्णोः ॥ नवमेतद्विना
 यमुमन्तातासहिकीलकं। मायिकममवाप्रातिमत्तं जायुतत्यर्चं ॥ सिद्धात्पुत्रादनादीनिदम्
 तिमकलानाथि। ननुतुसुवताददी ॥ कानुवृत्त्यनसिद्धाति ॥ तमकुमोषधं तनुतवि
 छिदयिसिद्धातं। विनतसिद्धातं ॥ वसिष्ठमपुत्रादनादिकं ॥ समग्रानुयिसिद्धाति ॥ ५
 लाकसंकासिमाहवशकृत्वातिमकु
 सर्वगुर्ध्रकावमः ॥ समासतु ॥ सम्युत्पन्नगीयथावन्निर्यनृत्तं ॥ मायिकममवाप्रातिसर्वमेव न
 मणयः ॥ कृष्णायाम्नाचरुदं ॥ मयुमास्मासमाहितः ॥ ददाति यतिगुक्रातिनायथेयायसि